अनुभूतियों के दंश

(लघु कथा संग्रह)

अन्तरा-शब्दशक्ति

चित्राकन- अभिषेक बौड़ाई

डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई

अनुभूतियों के दंश

(लघुकथा संग्रह)

(कमल वीथि पुष्प-5)

डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई

अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-01-8

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१
शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१
दूरभाष: (कार्या) ०७६३३-२५३१५९ मो ९४२४७६५२५९
अणुडाक- antrashabshakti@gmail.com

प्रथम संस्करण २०१८ © डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई
मूल्य: ४०.०० रुपये
आवरण चित्र : अभिषेक बौड़ाई
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

ANUBHUTIYON KE DANSH by Dr.Bharti Verma Baurai'

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं |प्रस्तृत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत : प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं| प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं|

कुछ कहना है

अपनी दादी
स्वर्गीया गेंदी देवी को
जिनकी बचपन में सुनाई कहानियों से
मेरे पापा का कहानीकार समृद्ध हुआ,
मुझे भी उनसे कहानी सुनने का सौभाग्य मिला।

अनुभूतियों का संसार बहुत विचित्र और बहुत ही अधिक समृद्ध है। कितनी ही मधु-तिक्त, हर्ष-विषाद, रुदन-हास्य, रहस्य-रोमांच, स्नेह-वात्सल्य, प्रेम-तिरस्कार और नफरत की अनुभूतियाँ मनो-मस्तिष्क में डेरा जमाए रहती हैं। कुछ हँसाती हैं, कुछ गुदगुदाती हैं, कुछ डराती हैं, कुछ रोमांच पैदा करती हैं, कुछ प्रेम के गलियारे में ले जाकर फिर से प्रेम की अनुभूति कराती हैं तो कुछ अनुभूतियाँ काँटे की तरह चुभती रहती हैं। कुछ ऐसी भी होती हैं कि जिनसे वे जुड़ी रहती हैं उनके स्मरण मात्र से व्यक्ति सिहर उठता है। प्रकृति से मनुष्य को यह गुण जैसे विरासत में मिला है कि वह घटी हुई बुरी, कम अच्छी अनुभूतियों को भूल कर, अच्छी को याद करते हुए अपने जीवन को सुखमय बनाने के लिए कर्मलीन होता है। उन्हें कभी- कभी अपने वैचारिक स्तर मिलने वाले आत्मीय मित्रों के साथ बाँटता है तो कभी अपनी लेखनी के माध्यम से सकारात्मक संदेश का प्रयास करते हुए विभिन्न विधाओं में शब्दबद्ध करता है।

कलाएँ मानव का हित करें...इसी के लिए इनका निर्माण हुआ। साहित्य भी एक कला है, जिसकी विभिन्न विधाओं के माध्यम से लिखने वाला समाज के हितार्थ अपने कर्तव्य को करते हुए इस यज्ञ में अपनी समिधा अर्पित करता है।

कार्य जो भी हो, उसका उद्देश्य मानव, समाज और देश- हित होना चाहिए। वह कार्य कैसा हुआ, कितना हुआ, अच्छा हुआ, बुरा हुआ... इसका निर्णय आने वाली पीढ़ियाँ करें। हम तो केवल सत्-उद्देश्य निर्धारित कर अपना कार्य करते चलें बस..... यह ऐसा ही एक प्रयास है।

डा० भारती वर्मा बौड़ाई

अनुक्रमणिका

1.	संतुष्टि	5
2.	संस्कार	6
3.	विजय	7
4.	टूटता मौन	8
5.	जुनून	9
6.	पहचान	10
7.	समाधान	11
8.	समझ	12
9.	मुखौटा	13
10.	मायका	14
11.	प्रेरणा	15
12.	पीली फराक	16

संतुष्टि

हमारे नेता सिर्फ़ अपनी जेबें भरने का काम कर रहें हैं भाई साहब! देशभक्ति से किसी का कोई सरोकार नहीं.....राव साहब की जोशीली आवाज़ बाहर तक सुनाई दे दे रही थी।

मोहल्ला समिति की बैठक चल रही थी। मुद्दा मोहल्ले के विकास का था।पर बैठक में हो रही बातों में दूर-दूर तक उसका नमोनिशान नहीं दिख रहा था। बस राजनीति की चर्चा ज़ोरों पर थी।

कोई पार्टी किसी काम की नहीं जी। देखते नहीं क्या रोज हम। रिबन काटने से ही फ़ुर्सत नहीं नेताओं को, काम क्या ख़ाक करेंगे!

अजी रोना तो इसी बात का है। भाषण देकर, सज-धज कर कार्यक्रमों की शिरकत करने में ही संतोष मिलता है इन्हें।

अरे भाई! चाय आ गई, पकौड़े भी। आनंद लीजिए।हमें तो इसी में आनंद मिलता है.... कहते हुए पाल जी ने खीसें निपोरी।

तुम सुनाओ भाई श्याम जी! कहाँ रहते हो? कभी हमारी चौपाल में भी बैठ लिया करो। झुग्गी-झोंपड़ी वालों में ही लगे रहोगे क्या?

आज आप लोगों की चौपाल में ही तो हूँ। पर यहाँ नेताओं को कुसते हुए ही देख रहा हूँ। काम से तो यहाँ भी किसी का सरोकार नहीं दिख रहा। मोहल्ले का विकास फिर कैसे होगा ज़रा बताइए तो जब हमें केवल चाय-पकौड़ों में ही संतुष्टि दिखेगी। मेरी संतुष्टि की परिभाषा तो अलग है पाल जी,जो मुझे ग़रीब बच्चों को पढ़ा कर मिलती है।चाय पी लेने के बाद सोच कर देखिएगा..... कहते हुए श्याम जी पढ़ाने के लिए चल दिए।

संस्कार

क्या यार! मूवी देखने ही तो चलना है।

हर बात घर में बतानी जरूरी होती है क्या?

हम तो घर से निकले तो रात को एंट्री लेते हैं घर में। एक तू है कि बिना बताए मूवी नहीं चल सकता।

तुम्हारा चलता होगा इस तरह घर में। हम तो घर में सब एक-दूसरे को अपने बारे में सब बता कर रखते हैं कहाँ जा रहें हैं, कब तक आएँगे।

अच्छा! अच्छा! देखा भाई लोगों अपने मोहित ममाज़ ब्वाय को! बिना पूछे मूवी जाने में यार की जान निकली जा रही है।

मोहित सोचने लगा कि जब वे सच छुट्टियों में दादा-दादी, नाना-नानी के घर रहने जाते थे तो कहीं भी जाते समय मम्मी-पापा नानी-दादी को बता कर घर से निकलते थे , पहुँचने में देर होती तो फ़ोन करके बताते थे।

नहीं -नहीं, वह इनकी बातों में आने वाला नहीं। उसने जो अपने मम्मी-पापा से सीखा है वो कैसे भूल सकता सकता है।

रात के शो में जाने का तो सवाल ही नहीं उठता।

अपने घर से मिले संस्कारों ने सिर उठा लिया था।

कल चलते हो तो चलो, नहीं तो तुम लोग जाओ... कहते हुए मोहित घर की ओर चल पड़ा।

विजय

विवाह से पहले ही गौरी नौकरी करने लगी थी वो भी दूसरे प्रांत में। शुरू में तो पिता उसे छोड़ने गए थे और कुछ दिन साथ रह कर लौट आए थे। फिर गौरी छुट्टियों में आने-जाने में सहकर्मियों के परिवारों का साथ ढूँढती थी। इसमें कई बार बहुत परेशानी भी उठानी पड़ती। धीरे-धीरे उसने अकेले यात्रा करना सीख लिया था। आत्मनिर्भर होकर अपने काम स्वयं करना अच्छा लगता था। अपने ऊपर आत्मविश्वास बढ़ने लगा था।

फिर विवाह हुआ तो स्थितियाँ बदलीं।कहीं भी जाना होता तो दोनों पति-पत्नी साथ जाते। धीरे-धीरे ऐसा हो गया कि अकेले जाने की आदत ही छूट गई।कहीं भी जाना होता तो कभी पति, कभी बेटी तो कभी बेटा कोई न कोई साथ जाता रहता।

बेटी के विवाह हो जाने और बेटे के दूसरे शहर जाने के बाद स्थितियाँ और तेज़ी से बदलीं। अब गौरी को अपने काम से कहीं जाना होता तो पति के हिसाब से मेल बैठाना पड़ता था। ऐसे में कभी वह जा ही नहीं पाती थी। न जा पाने पर दुखी भी होती थी। अकेले जाने का सोचती तो एक अनजाना डर मन में सिर उठाने लगता। कैसे जाऊँगी, कैसे करूँगी!

ऐसी ही एक स्थिति गौरी के सामने आई जब उसे एक एक साहित्यिक कार्यक्रम में शामिल होने ऋषिकेश जाना था। जाना तय था पर उसी दिन पति को किसी जरूरी काम से अन्यत्र जाना पड़ गया तो गौरी का जाना ठप्प। इतने दिनों से जाना है,जाना है.. चल रहा था। जाने का दिन आया तो इनका अपना जाना निकल आया।

पति के जाने के बाद, अपने न जा पाने के कारण स्वयं अपने ऊपर क्रोध आना स्वाभाविक था। अच्छी-भली पहले वह स्वयं सब जगह आया-जाया करती थी, पर विवाह के बाद तो जैसे पति-बेटी और बेटे के ऊपर निर्भर हो जाने के कारण उसका आत्मविश्वास तो ख़त्म हुआ ही, एक डर ने भी उसके अंदर जगह बना ली थी।

आज नहीं तो फिर कभी नहीं। इस डर पर तो उसे विजय पानी ही होगी। ऋषिकेश कौन सा बहुत दूर है। वह तो अकेले दूसरे प्रांत में नौकरी करती थी और अकेले आती-जाती थी, तो आज क्यों नहीं कर सकती वह ऐसा?

गौरी तैयार हुई और ऋषिकेश जाने के लिए निकल पड़ी। पूछते-पाछते वह कार्यक्रम स्थल पर पहुँची। अपने परिचित वहाँ मिल ही गए थे। शाम तक वह वापस घर भी लौट आई थी।

काम करते हुए गौरी का गुनगुनाना उसके अपने डर के ऊपर पाई विजय को परिलक्षित कर रहा था।

टूटता मौन

आठवीं कक्षा के बच्चों को चित्रकला का आठवाँ अंतिम पीरियड जरा भी मन नहीं भाता।घर जल्दी से जल्दी भागने की जो लगी रहती थी। पर गुरु जी को इस सबसे कोई सरोकार नहीं था। वे पूरे मनोयोग से बच्चों को चित्रकला सिखाने का प्रयास करते रहते।

मध्यांतर में बच्चे मिलजुल कर उन्हें परेशान करने के लिए नित नई योजनाएँ बनाते और उन्हें कार्यान्वित करते, पर गुरु जी थोड़ा-बहुत डाँट कर पढ़ाना शुरू कर देते ।

आज बच्चों ने योजना बनाई कि कक्षा में आने पर गुरु जी जैसे ही कुर्सी पर बैठने लगेंगे तो पीछे से कोई कुर्सी खींच लेगा और गुरु जी धड़ाम से नीचे। पर कुसुम को यह ठीक नहीं लगा। छोटी-मोटी शैतानियाँ तो ठीक हैं, पर उन्हें गिराना, चोट लगाना.... नहीं-नहीं... कोई ऐसा नहीं करेगा समझे तुम लोग! अरे जा-जा.... तू रोकेगी हमें? जो शैतानियों में सबसे आगे रहती है।

सबने मिल कर अपनी योजना को अंजाम दे डाला। गुरु जी गुस्से में लाल-पीले होते हुए कुसुम को खरी-खोटी सुनाने लगे।

कुसुम जानती थी कि आज उसकी कोई ग़लती नहीं नहीं है, तो यूँ मौन होकर अपराधी सिद्ध होना उचित नहीं है।

गुरु जी...यह सच है कि मैंने बहुत सारी शैतानियाँ कीं हैं, पर आप विश्वास करें आज मैं इसमें शामिल नहीं थी। मैंने सबको ऐसा करने से मना किया था।

सब एक सुर में चिल्लाए.... नहीं-नहीं गुरु जी! कुसुम ने ही पीछे से कुर्सी खींची थी। गुरु जी ने कुसुम की ओर देखा। उसकी आँखों में डर नहीं, सच्चाई की चमक दिखाई दे रही थी।

उन्होंने उसके सिर पर प्यार से हाथ फेरा और बोले...मैं जानता हूँ तूने कुछ नहीं किया। किसने किया है ये भी जानता हूँ। मेरे चोट लगने से अगर सबको अपनी गलती समझ आ जाए तो समझो आज का पीरियड बेकार नहीं गया।

सारे बच्चों को लगा उन्होंने ग़लत और कुसुम ने चुप न रह कर, सच कह कर सही किया।

जुनून

दीपा माँ! आप यहाँ कमरे में अँधेरा किए बैठी हैं और वहाँ हॉल में सब आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। चलिए जल्दी। दीप जला कर पूजा करके सबको अपने जन्मदिन का प्रसाद दीजिए।

आँखों में आए आँसुओं को रोकते हुए बोली... तुम चलो, बस मैं आई....कहते हुए न चाहते हुए भी अतीत की स्मृतियों में चली गई।

विवाह के बाद बच्चे न हो पाने का दुःख तो था ही, रही-सही कमी पति की मृत्यु ने पूरी कर दी। बाँझ और पति को खा जाने वाली के तानों ने जीना दूभर कर डाला था। जानवर की तरह काम में खटी रहती, तब भी पेट भर रोटी न पाती। प्यार के शब्द भी सुनने को तरस गई थी। हद तो तब हुई जब एक दिन सास-ससुर, जेठ-जेठानी चारों ने मिल कर पीटा और घर से बाहर निकाल दिया था।

जब आँख खुली तो उसने अपने को "अपना घर" आश्रम में पाया था। जिस प्यार को पाने को वह तरसी थी वो यहाँ भरपूर मिला। तब से एक जुनून सा उसके अंदर भर गया था.... अपनों के जिस प्यार को पाने के लिए वह तरसती रही उस प्यार से वह औरों को तरसने नहीं देगी। तब से वह अपना घर के सब लोगों के लिए जैसे अक्षय पात्र बन गई। अब वह किसी की माँ, ताई, चाची, मौसी, दीदी,दादी.....सब रिश्तों से भरपूर सबसे धनवान थी। अपना घर में उसके आने के दिन को सब उसके जन्मदिन के रूप में मानते थे।

हाल में पहुँच दीप जला कर, पूजा कर, तिलक लगा सबको हलवे का प्रसाद दिया। सबके दिए फूल आँचल में समेटे सबके साथ वह भी नाच-गाने में शामिल हो जीवन की ख़ुशियों को अपनों के साथ जीने में तल्लीन हो गई।

पहचान

मोमो बेचने वाली ठेली के पास जैसे ही एक कार रुकी वह तुरंत भाग कर उसके पास पहुँचा और कार का दरवाजा खुलने का इंतज़ार करने लगा। जैसे भी हो एक गुब्बारा तो इन्हें बेच कर ही रहेगा। कार से एक बुज़ुर्ग दंपति उतरे और कार पार्क करके आगे जाने लगे तो उनके पीछे लग लिया।

अंकल जी.....एक गुब्बारा तो ले लीजिए। आज मेरा एक भी नहीं बिका। घर में कोई तो होगा... उसके लिए ही ले लो अंकल! ले लो ना अंकल!

अरे! हमारे घर में कोई नहीं है जिसके लिए हम गुब्बारा लें।तभी एक ओर से आवाज़ आई...ओ गुब्बारे वाले! एक देना तो। उसे देकर वह फिर उनके पीछे लग गया....आप भी एक आंटी के लिए ही ले लो ना!

अच्छा तू एक बात बता... तू गुब्बारे क्यों बेचता है?

तो और क्या करूँ? स्कूल माँ-बाप ने जाने नहीं दिया। एक आदमी को बेच दिया मुझे। वो रोज गुब्बारे हाथ में देकर कारों के आगे-पीछे दौड़ने को भेज देता है, जो पैसे मिलते हैं छीन कर रुखा-सूखा खाना देता है बस।

पढ़ना चाहता है? स्कूल जाएगा?

अपने भाग में स्कूल नहीं अंकल!

अच्छा सुन! हमारे साथ चलेगा?

किसलिए? पढ़ने के वास्ते। हमारे साथ रहना, काम करना स्कूल जाना। स्कूल ड्रेस पहने बच्चों का दृश्य आँखों के सामने आते ही वह उदास हो गया। चल, तू हमारे साथ चलेगा.... कह कर वे बुज़ुर्ग दंपति उसे अपने साथ ले आए। अब तो उसकी दुनिया ही बदल गई है। वह उनकी सेवा भी करता है, प्यार भी पाता है और सबसे बड़ी बात..... ड्रेस पहन स्कूल पढ़ने जाता है।अब जीवन नाम से उसकी एक नई पहचान बन गई है जो उसे उन अंकल-आंटी, जिन्हें वो माँ-बाबा कहता है...से मिली है

समाधान

एक साहित्यिक आयोजन के लिए पटना जाने का कार्यक्रम बना, तो पत्नी और बेटे को साथ लिए भागता-दौड़ता नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पहुँचा, तो पता चला कि ट्रेन लेट है । सो आठ बजे जाएगी।

सोचा शाम पाँच बजे चलनी थी, और अब आठ बजे चलेगी तो भी थोड़ा देर से पटना पहुँच जाएँगे। स्टेशन की गहन भीड़ में जगह ढूँढ कर सामान रख पत्नी को बैठा दिया।

तभी सोचा कि इन्क्वायरी में जाकर ढंग से पता कर लूँ कि रात आठ बजे भी ट्रेन चलेगी या नहीं....जाकर लाइन में लगा। लाइन में लगे सब वहीँ के वहीँ खड़े थे और कुछ लोग लाइन से अलग झुंड बना कर आगे खिड़की पर पूछ-पूछ कर जा रहे थे।

ये देख कर मैं चुप न रह पाया और थोड़ा ऊँची आवाज़ में बोला.... भाई साहब! लाइन में खड़े हम सब क्या पागल दिखाई दे रहे हैं जो आप इन झुंड वालों को एक-एक कर बताए जा रहे हैं और हम वहीँ के वहीँ खड़े अपनी बारी आने का इंतज़ार कर रहे हैं।

तभी झुंड में से एक की आवाज़ आई.....अरे! नेता हो का? काहे एतना सोर मचा रहे हैं?

नेता नहीं न हूँ, तभी तो लाइन में लगा हूँ। नेता होता तो अंदर जाकर पता करके जा चुका होता। तभी और लोगों में भी जैसे जोश आ गया और लाइन में लगो, लाइन में लगो की आवाज़ें ज़ोर पकड़ने लगी।

अंदर से भी बाबू की आवाज़ आई....लाइन में लगो, अपनी बारी से आओ। सभी तो परेशान है, एक आप ही नहीं जो मेरे सिर पर चढ़े आ रहे हैं।

आम आदमी की आवाज़ उठी और सबके सुर मिले तो अनुसाशन में आना ही पड़ा। लाइन में लगे सभी खुश थे क्योंकि समाधान हो गया था। अब धैर्य से अपनी बारी आने का इंतज़ार करना उन्हें खल नहीं रहा था।

समझ

नीचे बैठने में होने वाली दिक्कत के कारण माला कथा-कीर्तनों में कम ही जाती थी। मजबूरी वश जाना पड़ता तो आधा घंटा पहले जाती और कुर्सी का सहारा लेती। आज जान-पहचान वालों की सत्यनारायण कथा में जाना जरूरी था, तो वही आधा घंटा पहले पहुँची। अंतिम अध्याय संपन्न हुआ , आरती हुई और प्रसाद ले सब बाहर निकले। तभी एक आवाज आई... ओहो! आज तो परदे की रानी के भी दर्शन हो गए। आया करो भई कभी-कभी। माला कुछ बोलती..इससे पहले ही दूसरी मिसाइल दगी..... अरे! सुना कुछ तुमने? क्या? कपरु वान भाई जी की लड़की का रिश्ता टूट गया।

नहीं तो, क्या हुआ? दहेज़ की बात रही होगी। उहँ.... दहेज़ कहाँ? चक्कर चल रहा था कहीं, पता चलेगा तो यही तो होगा। तभी एक बोली...चल तू तो निबटी शादी कर अपनी तीनों लड़कियों की। पीछे से दो को फुसफुसाहट कानों में पड़ी....जब अपनियों के चक्कर चल रहे थे, तो कानों में रुई ठूँस कर बैठी हुई थी, आज प्रवचन करने में लगी है।

माला को लगा असली सत्यनारायण कथा तो गेट से बाहर निकलने पर शुरू हुई है। उसे आज समझ आ गया कि वह ऐसे आयोजनों में नहीं जाती तो कुछ गलत नहीं करती।

मुखौटा

कॉलेज के वार्षिकोत्सव में "भ्रष्टाचार कैसे मिटाएँ" विषय पर मुख्य वक्ता के रूप में भाषण देने के बाद प्रधानाचार्य जी अपने कक्ष में पहुँचे। चपरासी भेज कर अपने विश्वस्त एकाउंटेंट को बुलवाया।

जी सर! आपने याद किया?

अरे हाँ... ये बताओ...वो अपने नेता जी का डोनेशन तो आ गया है न?

जी सर... उनका आदमी आया था।

ठीक.....अब तुम उनके चहेते का एडमिशन कर दो।

पर वो तो क्राइटेरिया में नही आता, तो कैसे? कहीं बबाल हो गया तो?

अरे!थैली आ गई है न! तो काहे डरते हो? बेटे को मोटरसाइकिल लेकर देनी है या नही?

हाँ सर ...तो फिर करो।

ठीक, अभी करता हूँ सब फिट। पर, एक बात पूछूँ सर?

वो आपका आज का भाषण......इतने मूर्ख कैसे हो तुम! हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के और...नही जानते क्या...बाकी बात दोनों के ठहाके में गुम हो गई।

मायका

एक ही शहर में सुमि का मायका और ससुराल दोनों थे। बच्चों के, उसके जन्मदिन पर माँ-पिता दोनों सुबह आते और शाम को लौट जाते थे। हँसी-ख़ुशी दिन बीतता था और उस ख़ुशी की याद कई-कई दिनों तक बनी रहती।
ऐसे ही एक बार वे आए तो सुमि के बच्चों ने सामान छुपा कर उन्हें रोक लिया। रोज़ वे जाने को तैयार होते, पर सुमि का बेटा उन्हें जाने ही न देता। अब तो अम्मा तुम तभी जाओगी जब मैं जाने दूँगा। देखो आपके फेवरेट हीरो अमिताभ बच्चन की फिल्म की सीडी लाया हूँ, चलो देखते हैं बैठ कर....और इस तरह जाना टलता रहता।

पर आज तो वे जाने को तैयार हो ही गए। कुछ शर्तों के साथ जाना मिला....अगली बार आने पर गाजर का हलवा और शकरपारे खूब सारे बना कर लाएंगी।

जब माँ-पिता चलने को हुए तो सुमि ने माँ को एक साड़ी और स्वेटर और पिता को एक शर्ट और स्वेटर...ये आप दोनों के लिए...कहते हुए दिया तो...नहीं,नहीं....देते तो माँ-बाप हैं, बेटियाँ नहीं...कह कर लेने से मना किया। सुमि बोली...माँ! जैसे आप दोनों मेरा मायका हो, उसी तरह आज से मेरा घर आपका मायका है बस। आप अपने मायके आई है तो अपनी माँ से आपको ये लेना ही पड़ेगा ना। मैं नहीं मानने वाली हाँ...।

माँ की आँखों में आँसू आ गए। वो सोचने लगी......माँ की तरह ही तो हमारी देखभाल करती है, प्यार लुटाती है सुमि, तो ये माँ ही तो बन गई मेरी और इसका घर मेरा मायका। बेटियाँ कैसे प्यार का सागर अपने अंदर समाए रहती हैं।

कब माँ और सुमि एक-दूसरे के गले लगी....दोनों को पता ही नहीं चला। दोनों की आँखों में आँसू थे।

माँ को आज महसूस हुआ कि वर्षों बाद वे पहले की तरह अपने मायके से विदा हो रही हैं।

प्रेरणा

मिली जब भी किसी कार्यक्रम में जाती तो श्यामा जी जरूर मिलती। मिलते ही नमस्कार होते ही जैसे अपना गोला दाग देती....अरे! पहले ये बताइये आजकल में नया क्या लिखा आपने? और मिली कभी हाँ कभी ना कह कर मन में सोचने लगती...भला हमेशा नया कहाँ से लिखा जा सकता है। पर प्रकट में कहती....अरे छोड़िये भी। मैं कहाँ लिखती हूँ, कलम चला कर लिखने का शौक पूरा कर लेती हूँ बस। आप बताइए अपने समाचार। फिर वह अपनी सुनाती रहती।

बहुत दिनों से श्यामा जी मिली नहीं थी। एक दिन उन्होंने फोन किया....अरे मिली! तुम उस कार्यक्रम में दिखी नहीं। मैं तो तुम्हें वहां ढूँढ़ती ही रह गई, तो सोचा फोन ही करती हूँ तुम्हें। और सुनाओ....नया क्या लिखा? मिलोगी तो सुनाना पड़ेगा जरूर।

फिर कुछ ऐसा हो गया कि जब भी मिली कुछ लिखने का सोचती तो उसे तुरंत याद आता....नया क्या लिखा....सुनाओ ना, और वो कुछ सोच कर लिखने लगती। लिख कर सोचती....श्यामा जी मिलेंगी तो इस बार उन्हें यह कहानी जरूर सुनाऊँगी।

और अब हर दिन कुछ न कुछ नया लिखने का क्रम चलने लगा मिली का। अनजाने में कब श्यामा जी उसके लेखन की प्रेरणा बन गई, उसे पता ही नहीं चला।

पीली फराक

बाबू! इस जन्मदिन पर तो मेरे लिए पीले रंग की फराक लाओगे न?

हाँ! हाँ! जरूर लाऊँगा।

हरिया के दिमाग में उठते ही रधिया की बातें गूँजने लगी।

बदन बुखार और दर्द से टूटा जा रहा था। हिम्मत उठने की नहीं हो रही थी पर आज पीली फराक तो रधिया को लाकर देनी ही थी। तो जैसे- तैसे उठ कर रधिया की माई को चाय बनाने को कह फारिग होने निकल गया। आकर नहाया और चाय के साथ रात की रखी रोटी खाई। डिब्बे में चार रोटी, अचार, मिर्च और प्याज रखवाया। उसे लेकर, सिर पर गमछा लपेट कर चल पड़ा। घंटाघर के पास बड़े डाकघर के सामने जाकर खड़ा हो गया जहाँ सारे मजदूर खड़े होते थे।

तब तक उसे वो बाबू दिख गए जो कई बार उसे अपने घर की सफाई करने के लिए ले गए थे। दौड़ कर बाबू को नमस्ते कर दी, शायद बाबू उसे सफाई के लिए ले जाएँ। बाबू ने उसे देखा तो अपने स्कूटर पर बैठा सफाई के लिए घर ले आए।

सफाई करते हुए एक बज गया तो मुँह-हाथ धो, मालकिन से पानी माँग कर खाना खाने बैठा।

पानी देते हुए मालकिन ने पूछा.. हरिया! आज तेरी तबियत ठीक नहीं है क्या?

हाँ मालकिन! दो दिन से तेज बुखार है।

तो काम करने क्यों आया? दवाई खाकर घर पर आराम करता। ऐसे तेरा बुखार उतरेगा भला?

जानत हूँ मालकिन! पर वो क्या बताऊँ? हमार बिटिया का आज जन्मदिन है। उसने पीली फराक लाने को बोला कब से? काम करने न आता तो फराक कैसे लूँगा? बस एहि खातिर चला आया।

ठहर, अभी बुखार उतरने की गोली देती हूँ तुझे... कह कर अंदर से लाकर चाय-बिस्किट दिए और और एक पैरासिटामोल दी।
चलते समय पैसों के साथ अपनी बेटी की छोटी हो गई पीले रंग की फ्राक और कुछ लड्डू दिए।

पैसे,फराक और लड्डू लेकर हरिया इतवार को लगने वाले बाजार की और चल पड़ा पीली फराक ख़रीदने के लिए। सोचता हुआ जा रहा था कि रधिया को नई फराक के साथ दो चाकलेट भी देगा तो वो कितनी खुश हो जाएगी।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - डॉ.भारती वर्मा बौड़ाई

माँ - श्रीमती कमला वर्मा

पिता - बाबूराम वर्मा

जन्म स्थान - देहरादून (उत्तराखण्ड)

जन्मतिथि - 04 अक्टूबर 1957

शैक्षिक योग्यता - एम.ए. (हिन्दी साहित्य), बी.एड., डी.फिल.(शोध द्वारा - गद्यकार बच्चन : एक आलोचनात्मक अध्ययन)

जीवन संगी - श्री राकेश आनंद बौड़ाई

संतान - दो (एक आत्मजा, एक आत्मज)

व्यवसाय - 24 वर्ष तक अरुणाचल प्रदेश के शिक्षा विभाग में अध्यापन। अक्टूबर 2005 मे स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति ली।

संप्रति - स्वतंत्र अध्ययन और लेखन

निवास स्थान - ''प्राच्य शिखर'' 95, दिव्य विहार, डांडा धर्मपुर, डाकघर - नेहरुग्राम, देहरादुन उत्तराखण्ड, पिन - 248001

फोन नं. - 9759252537

मेल आई.डी. - bharati.bourai007@gmail.com

प्रकाशित एकल पुस्तकें - (1) कविता का अरुणांचल (कविता संग्रह) 1985
(2) बच्चन साहित्य : अध्ययन का उपक्रम (आलोचना) 1998
(3) सृजन समीक्षा 2018
(4) उपहार (काव्य संग्रह)
(5) रंगों के साथ (काव्य संग्रह)
(6) अंतर्मन की यात्राएँ (काव्य संग्रह)
(7) आखर मीत (काव्य संग्रह)

प्रकाशित साक्षा संग्रह - 18 साझा संग्रहों में रचनाएँ प्रकाशित

पत्र पत्रिकाएं - लगभग 70 पत्र-पत्रिकाओं, ई पत्रिका, ब्लॉग में रचनाएँ प्रकाशित

सम्मान - वाणिज्य मंत्री (वर्तमान रक्षा मंत्री) निर्मला सीतारमण सहित विभिन्न संस्थाओं, प्रकाशनों द्वारा लगभग 12 सम्मानों से सम्मानित

सामाजिक क्षेत्र - अपने पति के ''अविराम प्रवाह ट्रस्ट'' द्वारा किए जा रहे सेवा कार्यों में सहयोग।

Women आवाज़ आधी आबादी की गूँज...
www.WomenAawaz.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

978-93-88102-01-8

मूल्य- 40/-

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१, संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com